IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

कला समेकित अधिगम AIL "दिशानिर्देन" के माध्यम से विधार्थियों को अध्यापन करवाने की विधि का समीक्षात्मक अध्धयन

डॉ. अन्तिमबाला पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, प्रशांति कॉलेज, उज्जैन
किरण धारू
शोधार्थी, विक्रम विश्वविद्यालय. उज्जैन

सारांश

'कला समेकित अधिगम' की परिकल्पना ऐसे शिक्षण-शास्त्र के रूप में की गई है जो विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू होता है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और मनोगत्यात्मक ज्ञानक्षेत्रों (साइकोमोटर डोमेन) को विकास करना है। 'कला समेकित अधिगम' ने विषयों के आपसी जुड़ाव और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को कई स्तरों पर समग्रता प्रदान की है।

शिक्षण-शास्त्रीय उपकरण के रूप में इसे कार्यान्वित करने से पहले, इस रूपरेखा का देश भर के विभिन्न स्कूलों में परीक्षण किया गया ताकि यह पता लगाया जा सके कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सार्थक और आनंदपूर्ण बनाने में यह कितना व्यावहारिक और प्रभावी है। इस प्रक्रिया में अनेक भागीदार जैसे; शिक्षक, प्रशासक वर्ग और अभिभावक शामिल थे। इन सब की प्रतिपुष्टियाँ अत्यधिक सकारात्मक और उत्साहवर्धक रही हैं।

कला समेकित अधिगम शिक्षण-शास्त्र का प्रारम्भिक कक्षा के शिक्षकों की योग्यता आधारित शिक्षण की तैयारी के लिये स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक पहल NISHTHA (National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement), में समावेशित किया गया है। इस विशाल क्षमता निर्माण कार्यक्रम, जिसमें कला समेकित अधिगम एक प्रशिक्षण मॉड्यूल है, के सुचारू क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए, यह दिशानिर्देश हमारे शिक्षकों के लिये महत्वपूर्ण एवं सुचारू मार्गदर्शक की भूमिका निभायेगा।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

ये दिशानिर्देश 'कला समेकित अधिगम' के एक अभिनव शिक्षण-शास्त्र के रूप में व्याख्या करते हैं और सभी शैक्षिक भागीदारों को इसके महत्व और प्रासंगिकता से अवगत कराते हैं। अगर सही अर्थों में इन दिशानिर्देशों को ध्यान में रखा जाए, तो यह ऐसी जीवंत कक्षा बनाने में सहायता कर सकते हैं, जहाँ हम विद्यार्थियों को गाते हुए सुन सकते हैं; उन्हें नृत्य, अभिनय और कला के कार्य करते देख सकते हैं। साथ ही साथ, उनकी शैक्षिक अवधारणाओं की बढ़ती हुई समझ की झलक भी देख सकेंगे।

इन दिशानिर्देशों का विकास विभागीय और संदर्भ व्यक्तियों के संघर्ष की पराकाष्ठा है। ये सभी इस यात्रा का हिस्सा रहे हैं; जो अब एक महत्वपूर्ण पड़ाव तक पहुँच चुकी है। इस पूरी यात्रा के दौरान गहन चर्चाएँ हुईं जिनके फलस्वरूप नई अवधारणाओं, विधियों और उद्देश्यों की प्राप्ति हुई। इसके फलस्वरुप 'कला समेकित अधिगम' एक शिक्षण-शास्त्र का रूप ले पाया।

प्रस्तावना

विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से उत्सुक होते हैं। वे वस्तुओं के साथ खेलना पसंद करते हैं। बस संगीत, लय और रंग उन्हें आकर्षित करते हैं। लगभग जन्म के समय से ही वे प्रकाश, ध्वनि, लय, गति, छाया, आकार और रंगों के परस्पर खेल से आनंदित होते हैं। दिन-प्रतिदिन के अनेक दृश्यात्मक और स्पर्शात्मक अनुभव बच्चों के समग्र विकास में सहायता करते हैं जैसे- रसोई में अनाज या दालों की छानबीन, रेत से मूर्ति आदि बनाना, अँगुलियों से पेंटिंग करना, कोयले से लकीरे खींचना, डंडे और झाड़ जैसी वस्तुओं से खेलना, बाबा जी की छड़ी को घोड़ा बनाकर उसकी सवारी करना या 'घर-घर' खेलना आदि। वे धूप का प्रयोग करते हुए विभिन्न छाया-चित्र बनाते हैं जिससे उनकी प्रयोग करने की प्रवृति और वैज्ञानिक स्वभाव की झलक मिलती है। वे लकड़ियों या कंकड़ों से वर्ग, रेखाएँ और वृत्त जैसे आकार बनाते हैं जिससे उनके गणितीय अवधारणाओं की ओर झुकाव का संकेत

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

मिलता है। अच्चे स्वाभाविक रूप से उत्सुक होते हैं। वे वस्तुओं के साथ खेलना पसंद करते हैं। बस संगीत, लय और रंग उन्हें आकर्षित करते हैं। लगभग जन्म के समय से ही वे प्रकाश, ध्वनि, लय, गति, छाया, आकार और रंगों के परस्पर खेल से आनंदित होते हैं। दिन-प्रतिदिन के अनेक दृश्यात्मक और स्पर्शात्मक अनुभव बच्चों के समग्र विकास में सहायता करते हैं।भारत में, नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने कला और अधिगम के बीच संबंध के विचार की नींव रखी। उनके कई विचारों को उनके विद्यार्थी देवी प्रसाद (1998) द्वारा 'कला- शिक्षा का आधार' नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। कार्यक्षेत्रों में किए गए व्यापक अनुसंधानों ने सिद्ध किया है कि सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में दृश्य और प्रदर्शन कलाओं का उपयोग सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करता है, समस्याओं को सुलझाने की क्षमता विकसित करता है और मानसिक कल्पना-चित्रों (बिंबों) के प्रयोग की योग्यता में सुधार करता है। साथ ही, यह स्थान (स्पेस) का रचनात्मक रूप से उपयोग करने की समझ भी देता है।

सीखने की प्रक्रिया में कला के महत्व की पुष्टि करने वाले कई महत्वपूर्ण शैक्षिक अनुसंधान उपलब्ध हैं। कला के माध्यम से सीखने का लक्ष्य विद्यार्थी की संज्ञानात्मक (सोच, स्मरण और चिंतन), संवेदात्मक (सामाजिक और भावनात्मक) और मनो-गत्यात्मक (शरीर और गति-चाल का उपयोग) क्षमताओं का विकास करना है। खान और अली (2016) ने अपने अध्ययन 'ललित कला की शिक्षा का महत्व- एक अवलोकन में पाया कि ललित कलाओं का अध्ययन और उनमें हिस्सा लेना विद्यार्थी के व्यवहार और दृष्टिकोण, दोनों को प्रभावित करता है। "ललित कलाओं की उचित शिक्षा का यह प्रभाव होता है कि विद्यार्थी जो भी देखते है, उन्हें ध्यान से देख पाते हैं; जो भी सुनते हैं, उसे ध्यान से सुन पाते हैं; और जिन चीज़ों को वे छूते हैं, उन्हें महसूस भी कर पाते हैं। ललित कलाओं में संलग्न होने से विद्यार्थियों को छपी हुई सामग्री की सीमाओं से परे या साबित करने योग्य नियमों से हटकर सोचने में सहायता मिलती है।"

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

कला समेकित अधिगम में प्रयोग की जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण तरीके और तकनीक

▶ बुद्धिशीलताः यह एक समूह में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए एक व्यावहारिक अभ्यास है, और एक बहुत ही उपयोगी प्रशिक्षण तकनीक भी है। इस बुद्धिशीलता का उद्देश्य एक निश्चित समय के भीतर एक विशिष्ट विषय पर निःसंकोच विचारों को एकत्र करना है। एक बार जब आप समूह को विषय बता देते हैं, तो उन्हें इससे जुड़े विचारों, टिप्पणियों, वाक्यांशों या शब्दों को प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करें। सभी प्रतिक्रियाओं को टिप्पणियों या प्रश्नों के बिना, ब्लैक-बोर्ड या फ्लिप-चार्ट पर लिखें। विचार-मंथन की प्रक्रिया किसी भी निर्णयात्मक टिप्पणी के प्रलोभन से बचने के लिए अनुशासन की मांग करती है।

▶ आइस ब्रेकरः यह एक ऐसी गतिविधि है जो आनंदपूर्ण सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए आयोजित की जाती है। ये गतिविधियाँ कला आधारित

कला के माध्यम से संभावित परिणामों के प्रमाण के रूप में कुछ अनुभवजन्य अध्ययनों को यहाँ उद्धृत किया गया है।

* कला और वंचित समूहः वाशिंगटन के एक प्राथमिक विद्यालय में एक अध्ययन किया गया। उस विद्यालय में समाज के सभी वर्गों के विद्यार्थी पढ़ते थे। अध्ययन द्वारा यह पाया गया कि यदि शैक्षणिक कक्षाओं में कलाओं का उपयोग किया जाये तो इससे गणित और अंग्रेजी की परीक्षाओं में प्राप्त अंकों में सुधार होता है (डोना सेंट जॉर्ज, 2015)। इस समेकित पद्धति (इंटीग्रेटेड अप्रोच) से निर्धन विद्यार्थियों को विशेष लाभ हुआ। शोधकर्ता ने इस बात पर बल दिया है कि कला के समेकन में रुचि विश्व-स्तर पर बढ़ रही है। यह रुचि उन अनुसंधानों के कारण बढ़ रही है जो विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सामाजिक और व्यक्तिगत लाभों की ओर संकेत करते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

▸ कलाएँ नवीन/अभिनव प्रक्रियाओं का सृजन करती हैं: नोबोरी (2012) इस बात से चकित थी कि कलाएँ अधिगम के मार्गों को किस प्रकार खोल देती हैं। कभी-कभी कला के समेकन की प्रक्रिया, कक्षा में कला-परियोजनाओं के उपयोग जैसी लग सकती है। लेकिन यह शिक्षण की एक पद्धति है, जो केंद्रीय पाठ्यचर्या और कला के अनुभवों को अभिन्न रूप से जोड़ देती है। जोड़ने का यह कार्य सीखने के रोचक संदर्भों द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों द्वारा सौर-प्रणाली की अपनी समझ को प्रदर्शित करने के लिए गतिमान और अगतिमान मुद्राओं का उपयोग करते हुए नृत्य करना।

कला और संज्ञानात्मक प्रक्रिया: बेनेगल (2010) द्वारा उल्लेख किया गया कि कला मस्तिष्क में नाटकीय बदलाव लाती है, जैसे कि 'ध्यान देने के तंत्र' को मजबूत करना। मस्तिष्क के वे क्षेत्र जो संगीत में सम्मिलित होते हैं, वे भाषा, श्रवण धारणा, ध्यान, स्मृति और मोटर नियंत्रण की प्रक्रियाओं में भी सक्रिय होते हैं। आज के ज्ञान आधारित संसार में संतुलित मानसिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कला शिक्षा की बहुत आवश्यकता है।

> कला और सामाजिक भावनात्मक विकासः प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अपने शोध में हायें (1989) ने पाया कि कला प्रक्रिया बोध, उपलब्धि, अभिप्रेरणा और आत्म-अवधारणा से जुड़ी होती है। संक्षेप में, जब कला और सीखने की प्रक्रिया का समेकन किया जाता है, तब यह शिक्षा के भावात्मक पक्ष को भी मजबूत करती है। "कला, लय-गति और संगीत के उपयोग के परिणामस्वरूप रूपकों का निर्माण और सामाजिक भावनात्मक इंद्रों का समाधान किया जा सकता है। इस तरह, सृजनात्मक कलाओं की रीतियाँ, 'सृजनात्मकता के संज्ञानात्मक पक्षों' तथा 'व्यवहार और व्यक्तित्व परिवर्तन के चिकित्सीय पक्षों को आपस में जोड़ती हैं। सोच और भावना के इस समेकन के कारण, सृजनात्मक कलाओं के उपचार सामाजिक/भावनात्मक और शैक्षणिक व्यबादर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने का अवसर प्रदान करते हैं।"

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

> शिक्षण-शाख के रूप में कलाः पुरी और अरोड़ा, (2013) ने नई दिल्ली में नगर निगम विद्यालयों की 107 कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' के उपयोग की समीक्षा की और पाया कि- (i) स्कूल के वातावरण में उल्लेखनीय बदलाव हुआ (ii) सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भागीदारी का स्तर बढ़ा (iii) विद्यार्थियों की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ (iv) शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार हुआ और (v) जिन कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' का उपयोग नहीं किया जा रहा था, उन कक्षाओं में पड़ने वाले विद्यार्थियों की तुलना में इन विद्यार्थियों में नई स्थितियों को संभालने के लिए अधिक आत्मविश्वास और खुलापन पाया गया।कला और संज्ञानात्मक प्रक्रिया: बेनेगल (2010) द्वारा उल्लेख किया गया कि

कला मस्तिष्क में नाटकीय बदलाव लाती है, जैसे कि 'ध्यान देने के तंत्र' को मजबूत करना। मस्तिष्क के वे क्षेत्र जो संगीत में सम्मिलित होते हैं, वे भाषा, श्रवण धारणा, ध्यान, स्मृति और मोटर नियंत्रण की प्रक्रियाओं में भी सक्रिय होते हैं। आज के ज्ञान आधारित संसार में संतुलित मानसिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कला शिक्षा की बहुत आवश्यकता है।

> कला और सामाजिक भावनात्मक विकासः प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अपने शोध में हायें (1989) ने पाया कि कला प्रक्रिया बोध, उपलब्धि, अभिप्रेरणा और आत्म-अवधारणा से जुड़ी होती है। संक्षेप में, जब कला और सीखने की प्रक्रिया का समेकन किया जाता है, तब यह शिक्षा के भावात्मक पक्ष को भी मजबूत करती है। "कला, लय-गति और संगीत के उपयोग के परिणामस्वरूप रूपकों का निर्माण और सामाजिक भावनात्मक इंद्रों का समाधान किया जा सकता है। इस तरह, सृजनात्मक कलाओं की रीतियाँ, 'सृजनात्मकता के संज्ञानात्मक पक्षों' तथा 'व्यवहार और व्यक्तित्व परिवर्तन के चिकित्सीय पक्षों को आपस में जोड़ती हैं। सोच और भावना के इस समेकन के कारण, सृजनात्मक कलाओं के उपचार सामाजिक/भावनात्मक और शैक्षणिक व्यबादर को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने का अवसर प्रदान करते हैं।"

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

> शिक्षण-शाख के रूप में कलाः पुरी और अरोड़ा, (2013) ने नई दिल्ली में नगर निगम विद्यालयों की 107 कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' के उपयोग की समीक्षा की और पाया कि- (i) स्कूल के वातावरण में उल्लेखनीय बदलाव हुआ (ii) सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भागीदारी का स्तर बढ़ा (iii) विद्यार्थियों की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ (iv) शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार हुआ और (v) जिन कक्षाओं में 'कला समेकित अधिगम' का उपयोग नहीं किया जा रहा था, उन कक्षाओं में पड़ने वाले विद्यार्थियों की तुलना में इन विद्यार्थियों में नई स्थितियों को संभालने के लिए अधिक आत्मविश्वास और खुलापन पाया गया।

कला समेकित अधिगम' ने विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने के अवसर दिए हैं।

जब उन्होंने कला की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया, तो वे और अधिक उत्साही बन गए, उनकी जिज्ञासा बढ़ गई, उन्होंने नई चीजों की खोज और निर्माण करना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने स्वेच्छा से एक-दूसरे की सहायता और सहयोग करना शुरू कर दिया। 'कला समेकित अधिगम द्वारा उन्होंने बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के गणित और विज्ञान के 'अधिगम प्रतिफल प्राप्त कर लिए हैं। अब वे कक्षा-परीक्षणों से डरते नहीं हैं। एक-दूसरे की बात सुनने, संवाद करने की उनकी क्षमता कई गुना बढ़ गई है।

'कला समेकित अधिगम' के उद्देश्य

"कला समेकित अधिगम' में निहित शिक्षण-शास्त्र प्रत्येक बच्चे को उसकी गति के अनुसार सीखने की सुविधा देता है। सभी बच्चों की सीखने और विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति कला के माध्यमों द्वारा प्रदर्शन और अभिव्यक्ति से सम्भव हो जाती है, चाहे वे विशेष जरूरतों वाले बच्चे हों, कमजोर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले हों या फिर अलग-अलग संस्कृति वाले बच्चे हों। कला बच्चों के प्राकृतिक स्वभाव के साथ मेल खाती है और प्रकृति के साथ एक होकर जीने को बढ़ावा देती है। 'कला समेकित अधिगम' में किए जाने वाले खोज, अवलोकन और प्रयोग; अधिगम को प्रत्येक व्यक्ति के लिए मूर्त, सृजनात्मक और उपयोगी बना देते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 9, March 2025 Impact Factor: 7.67

विद्यार्थियों की कलाकृतियाँ उनके सामाजिक संदर्भों की जीवंतता को सामने लाती हैं। कला एक यात्रा है जहाँ विभिन्न व्यक्ति सहयात्री बन जाते हैं। वे एक दल (टीम) के रूप में साथ-साथ आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे के साथ अपने अनुभव साझा करते हैं। इससे भाषा की बाधाएँ भी टूटती हैं क्योंकि कला की अपनी स्वयं की भाषा होती है। बच्चों को कला के माध्यम से विभिन्न पृष्ठभूमियों से संबंधित बाधाओं से परे जाकर आपस में संप्रेषण और संपर्क स्थापित करने में मदद करती हैं। इस तरह, कला की छोटी-छोटी गतिविधियों के द्वारा बच्चे सामाजिक वास्तविकताओं की विविधता और सह-अस्तित्व के बारे में सीखते हैं।

विद्यालय के उत्सवों जैसे; खेल दिवस, स्वास्थ्य मेला, विज्ञान मेले और अन्य पर्वों में कला के मात्र छू जाने भर से उल्लास, अपनापन और स्वागत की भावना आती है। विद्यालय-परिसर के विभिन्न भागों जैसे कक्षाओं, गलियारों, विभिन्न कमरों और खुले क्षेत्रों में, स्थानीय कलाओं और शिल्पों का समेकन करने से विद्यालय का वातावरण आकर्षक और बच्चों के अनुकूल तो बन ही जाता है, साथ ही बच्चों के घर और विद्यालय के बीच संबंध भी जुड़ जाता है। अधिगम के साथ कला का समेकन-

'उत्पाद' की अपेक्षा, 'प्रक्रिया' के अनुभव को बढ़ावा देता है

शैक्षिक सामग्री के अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देता है।

अंतःविषयी सम्बन्धों को बढ़ावा देता है

▶ आत्म-चिंतन के लिए अवसर और स्वतंत्रता के साथः अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है।

विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रों (डोमेन) के विकास को बढ़ावा देता है।

विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों को 'साझा मंच' पर संवाद करने की संभावना को बढ़ावा देता है।

कला समेकित अधिगम में प्रयोग की जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण तरीके और तकनीक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

▶आई सी टी-पर आधारित संसाधन

शिक्षक और विद्यार्थी सामग्री और गतिविधियों संबंधी उदाहरणो की जानकारी के लिए आईटीसी संसाधनों जैसे कम्पुटर और इंटरनेट का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। बेहतर परिणाम के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में कुछ श्रवण दृश्य सामग्री का उपयोग भी किया जा सकता है। मनोरंजक और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए फिल्मों और लघु वीडियो का प्रयोग भी किया जा सकता है। राष्ट्रीय शैक्षिक संसाधन जैसे ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (एनआरओईआर) को कला समेकित अधिगम के उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।

बुद्धिशीलताः यह एक समूह में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए एक

व्यावहारिक अभ्यास है, और एक बहुत ही उपयोगी प्रशिक्षण तकनीक भी है। इस बुद्धिशीलता का उद्देश्य एक निश्चित समय के भीतर एक विशिष्ट विषय पर निःसंकोच विचारों को एकत्र करना है। एक बार जब आप समूह को विषय बता देते हैं, तो उन्हें इससे जुड़े विचारों, टिप्पणियों, वाक्यांशों या शब्दों को प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करें। सभी प्रतिक्रियाओं को टिप्पणियों या प्रश्नों के बिना, ब्लैक-बोर्ड या फ्लिप-चार्ट पर लिखें। विचार-मंथन की प्रक्रिया किसी भी निर्णयात्मक टिप्पणी के प्रलोभन से बचने के लिए अनुशासन की मांग करती है।

▶ आइस ब्रेकरः यह एक ऐसी गतिविधि है जो आनंदपूर्ण सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए आयोजित की जाती है।

अधिगम के माध्यम से मूल्यांकन

ला समेकित अधिगम में सामाजिक-भावनात्मक परिणामों और सीखने की सामग्री क को बेहतर बनाने के लिए कला के कई रूपों का उपयोग करने की प्रक्रिया है। छात्र विषय सामग्री को समझने और प्रदर्शन करने के लिए दृश्य और प्रदर्शन कला गतिविधियों (परफोरमिंग आर्ट) का उपयोग करते हुए रचनात्मक जांच प्रक्रिया

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

में लगातार सक्रिय होते हैं। यह एक अंतर-शैक्षणिक दृष्टिकोण है, जहां बच्चे को विभिन्न प्रकार के कला अनुभवों में संलग्न रहते हुए मुक्त अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त स्थान और गुंजाइश दी जाती है।

अध्ययन के निष्कर्ष सकारात्मक थे और सांख्यिकीय आंकड़े उसके पक्ष में थे। प्रयोगसिध्द निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि प्रशिक्षित अध्यापकों एवं प्राचार्यों का झुकाव गैर प्रशिक्षित अध्यापकों एवं प्राचार्यों की अपेक्षा कहीं अधिक था। कला समेकित शिक्षा प्रशिक्षित लाभार्थियों की अवधारणा, पाठ्यक्रम प्रबंधन, विद्यार्थी केन्द्रित कक्षा, पठन सामग्री का पूर्णत, और बच्चे के समग्र विकास के संदर्भ में सकारात्मक थी। लगभग 90-100% कला समेकित अधिगम पर प्रशिक्षित शिक्षकों का मत था कि इससे शिक्षण अधिगम की प्रभावशीलता में वृद्धि हुई है। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों और विद्यालय के वातावरण में बच्चों की भागीदारी में सकारात्मक अंतर दिखने लगा है जो सीखने को अनुभवात्मक और आनंदमय बनाने में सहायक है। जिला शिक्षा निदेशालय (डीडीई) पश्चिमी दिल्ली से प्राप्त सकारात्मक प्रक्रिया के अनुसार विद्यालयों में कला समेकित शिक्षा के लागू होने से सहपाठी अधिगम में वृद्धि हुई।

इस अध्ययन में शामिल संसाधन व्यक्तियों ने कला समेकित शिक्षण-शास्त्र को समझने और लागू करने के लिए शिक्षकों की क्षमता की सराहना की। इस संदर्भ में एक आम सहमति से उन्होनें इसे एक प्रभावी नवाचार है, जो शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता रखता है। कुल मिला कर अध्ययन लाभकारी था एवं कला समेकित अधिगम शिक्षा शास्त्र की प्रभावशीलता का विश्लेषणात्मक प्रमाण था।

निष्कर्ष

कला समेकित अधिगम' ने विद्यालय के बातावरण में जीवन और उत्साह को जोड़ा है। एक ओर तो इसने उनकी अधिगम और मूल्यांकन के डर को दूर करने में मदद की, दूसरी ओर स्वयं को व्यक्त करने की उनकी उत्सुकता को भी बढ़ा दिया। इसने सभी बच्चों को स्थान और अवसर प्रदान किया है। अब मेरा स्कूल प्रगतिशील और आनंदपूर्ण अधिगम का मंच बन गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

'कला समेकित अधिगम' सीखने-सिखाने का एक मॉडल है जो 'कलाओं के माध्यम से' और 'कलाओं के साथ' सीखने का एक तरीका है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ कला सीखने-सिखाने का माध्यम बन जाती है, पाठ्यक्रम के किसी भी विषय की अवधारणाओं को समझने की कुंजी बन जाती है। 'कला समेकित अधिगम' द्वारा विद्यार्थी विभिन्न कला-रूपों के माध्यम से विभिन्न अवधारणाओं के बीच सृजनात्मक रूप से संबंध बनाते हैं। दृश्य कलाओं (चित्र बनाना, रंग भरना, मिट्टी से खिलौने आदि बनाना, चाक द्वारा बर्तन आदि बनाना, कागज़ से वस्तुएँ बनाना, मुखौटे और कठपुतली बनाना, अन्य परंपरागत शिल्प) और प्रदर्शन कलाओं (संगीत, नृत्य, थिएटर, कठपुतली आदि); दोनों के अनुभव, बच्चों को विभिन्न अवधारणाओं की बेहतर समझ और ज्ञान के सृजन की ओर ले जाते हैं। कला में लचीलापन निहित होता है अतः इसके द्वारा विद्यार्थियों की आयु के अनुसार उन्हें उपयुक्त अवसर दिए जा सकते हैं। इससे विद्यार्थी अपनी व्यक्तिगत गति से सीख सकते हैं। यह •अनुभव आधारित अधिगम' के दृष्टिकोण से भी मेल खाता है।

आज के संसार में जहाँ एक ओर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, वहीं दूसरी ओर असाध्य सामाजिक और सांस्कृतिक अन्याय भी हो रहा है। तेजी से बदलती इस दुनिया में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा-व्यवस्था संघर्ष कर रही है। इस शिक्षा-व्यवस्था के रचनात्मक परिवर्तन में कला-शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।"

संदर्भ

1. खान, मोहम्मद मुजफ्फर अली, शेख लियाकत, द इंपोर्टेन्स ऑफ फाइन आर्टस एडुकेशन एन ओवरविव्यू जरनल्स, जरनल ऑफ रिसर्च इन ह्यमनिटीज एण्ड सोशल साइंस वॉल्यूम-4 इश्यू 10, 2016

2. द सिओल एजेंडाः गोल्स फॉर द डेव्लपमेंट ऑफ आर्ट्स एडुकेशन, द सेकेण्ड वर्ल्ड कॉफेरेंस ऑन आर्ट एडुकेशन सिओल 2010

3. पोजीशन पेपर ऑन आर्ट्स, म्यूजिक, डांस एंड थिएटर, एनसीईआरटी 2006

4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एनसीईआरटी, 2005

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

5. ट्रेनिग पैकेज फॉर आर्ट इंटीग्रेटेड फॉर प्राइमरी टीचर एनसीईआरटी 2015

6. सेंट जॉर्ज, डोना. सेंट मोर स्कूल्स आर वर्किंग टु इंटीग्रेट्स आर्टस इन क्लास रूम वाशिंगटन पोस्ट. दिसंबर 2015

7. नोबोरी मारिकों, 'हाऊ द आर्ट्स अनलॉक द डोर टु लर्निंग; एडुटोपिया जॉर्ज लूकस फाउंडेशन फॉर एडुकेशन अगस्त 2012

8. रिपोर्ट ऑन नेशनल सेमिनार ऑन आर्ट इंट्रीगेटेड लर्निंग, डीईएए, एनसीईआरटी 2012

9. प्रसाद, देवी. आर्ट द बेसिस ऑफ एडुकेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट, 1998

10. जे.एम. स्मिता, एक्टिव लर्निंग एज एन इफ़्फ़ेक्टिव टूल टु एनहेन्स कोम्नीशन, जरनल ऑफ इण्डिया एडुकेशन नवंबर 2017. पृष्ठ. 155-166

11. रेइस, रिकर्डो. 'पब्लिक आर्ट एज एन एडुकाशन रिसोर्सः इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एडुकेशन थ्रो आर्ट, वॉल्यूम, 6, 2010. पृष्ठ. 85-96

12. डनकम, पी. 'अ केस फॉर एन एडुकेशन ऑफ एवेरी डे एस्थेटिक एक्सपेरिएन्स' स्टूडेंट इन आर्ट एडुकेशन वॉल्यूम, 40, 1999. पृष्ठ. 295-311

13. स्पीलाने, जेम्स पी. मेगन होपकिंस, एंड टेरेसी एम. स्वीट. "इंट्रा- एंड इंटरस्कूल इंतरेक्सन अबाउट इंस्ट्रकशनः एक्सप्लोरिंग द कंडीशन फॉर सोशियल केपिटल डेव्लपमेंटE" अमेरिकन जनरल ऑफ एडुकेशन, नंबर, 1, 2015. पृष्ठ. 71-110.

14. ब्रौईल्लेते, लिएन, हाऊ व आर्ट्स हेल्प चिल्डेरेन टु क्रिएट हेल्थी सोशियल स्क्रिप्ट्सः एक्सप्लोरिंग द परशेपशन ऑफ एलीमेंटरी टीचर्स, आर्ट एडुकेशन पॉलिसी रिव्यू, 111:1, 2009. पृष्ठ 16-24

SUGGESTED READINGS/ सुझाई गई पठन-सामाग्री

बढ़ेका गिजुभाई, दिवास्वपन, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2004

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 9, March 2025
Impact Factor: 7.67

क्लार्क, आर. आर्ट एडुकेशनः इशू इन पोस्टमोडरिस्ट पेड़गोजी, केनेडियन सोसाइटी फॉर

एडुकेशन श्री आर्ट एंड द नेशनल आर्ट एडुकेशन एसोशिएशन, 1996

फ्लोबले, फ्रीएडरीक, अनुवाद- हैलमन डब्लयू. एन. द एडुकेशन ऑफ मैन, डोवर पब्लिकेशन, 2005

फ्राय, रोजर. विज़न ऐंड डिजाइन, वेन्त्वर्थ प्रेस 2016

मार्शल, जे. सबसेनटिव आर्ट इंटीग्रेशन एकसेमपालरी आर्ट एडुकेशन 59.6: 2006

पियागेट, जीन लेंगवेज़ एंड ठोट ऑफ द चाइल्ड, रूटलेज और केगन पॉल, लंदन, 1926

पोजीशन पेपर ऑन आर्ट्स, म्यूजिक, डांस ऐंड थिएटर, एनसीईआरटी, 2006

प्रसाद, देवी, आर्ट द बेसिस ऑफ एडुकेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट, 1998

रीड, हरबर, एडुकेशन श्रु आर्ट, फेबर एंड फेबर, लंदन, 1945.

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एनसीईआरटी, 2005

ट्रेनिग पैकेज फॉर आर्ट इंटीग्रेशन फॉर प्राइमरी टीचर वॉल्यूम 1 और 2 एनसीईआरटी, 2015